ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2020
Innovation The Research Concept

संचार
Communication

Paper Submission: 15/08/2020, Date of Acceptance: 26/08/2020, Date of Publication: 27/08/2020

वंदना याज्ञिक
व्याख्याता,
गृह विज्ञान विभाग,
पहलवान गुरुदीन महिला महाविद्यालय, ललितपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भोजन वस्त्र तथा आवास के साथ–साथ मनुष्य की एक मौलिक आवश्यकता है अपनी मानो भावनाओं को अभिव्यक्त करना तथा अपने सह जनो के साथ वार्तालाप करना। मनुष्य की यह आद्य प्रवृति है जिसके लिए वह लालायित रहता है मनुष्य की यह भावना सम सामायिक सभ्यता में विद्यवान रहने या वने रहने की एक आवश्यक शर्त बन गई है संचार या संवाद के बिना आधुनिक जीवन का कोई अस्तित्व नही है और संचार ही जीवन की कल्पना नही की जा सकती है। Communication begins with life and ends only when life ceases to exist. In other words, it is co-terminus with life.

Along with food, clothing and accommodation, a fundamental need of man is to express his feelings and to have a conversation with his fellow people. This is the primordial tendency of man for which he is eager. This feeling of man has become a necessary condition to remain or live in an equitable civilization without communication or communication, modern life has no existence and communication is the imagination of life. Can not be done.

मुख्य शब्द : समसामायिक, संचार, संवाद, भावना, संचारहीन।
Contemporary, Communication, Dialogue, Emotion, Communicationless

प्रस्तावना

जब शिशु गर्भ में रहता है तो उसकी समास्त आवश्यकताओं की पूर्ती स्वतः हो जाती है तथा वह पूर्णतः सुरक्षित होता है किन्तु जन्मोपरांत स्थितियॉ बदल जाती है जन्म लेती ही शिशु का प्रथम क्रन्दन इस तत्व की ओर इंगित करता है कि वह बाहरी दुनिया के इस नये परिवेश से सम्पर्क स्थापित करना चाहता है इसे अभिव्यक्ति का प्रथम कृत्य कहा जा सकता है जन्वजात शिशु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए संचार का सहारा लेता है। तथा अपनी भावनाओं को दूसरो तक पहुँचाता है। भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा विचारो का आदान प्रदान मनुष्य के जीवन प्रर्यन्त चलता रहता है और उसकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियॉ (ऑख, कान, नाक, त्वचा, तथा जीब) इस कार्य में मनुष्य की सहायता करती है सच पूछा जाये जो ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ही मनुष्य अपने जीवन के समस्त अनुभव बटोरता है इन्ही अनुभवो को वही दूसरो के साथ बाँटता भी है। अनुभाव एवं अनुभुतियो को बटोरने और बाटने की यही क्रिया संचार कहलाती है आदिकाल से मनुष्य विभिन्न भंगिमाएँ बनाकर अनेकानेक भावों, मुद्राओं के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता आया है। कालांतर में जब भाषा, चित्रकला, संगीत, नृत्य, सहित्य की विविध विधाओं और रसों, इत्यादि का विकास हुआ तो मनुष्य को अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम मिले और वह अपने अनुभवो को दूसरो के साथ बॉटने में अधिक सक्षम होता गया। The researches show that on an average a person spends about 70% of his active time in communicating verbally- listening speaking, reading and writing.

संचार के रूप

हमारे जीवन में संचार के रूपो या प्रकारो में विद्यवान है संचार सर्म्पक हम अनेक रूपो में स्थिपित करते है इनमे भाषा और लिपी के अतिरिक्त हमारे भाव भंगिमाएँ, हमारा मुस्कुराना, मुँह बिचकाना, पलके झपकाना, भौहे ताडना, ऑखे तरेरना, दॉत भीचना, हाथ मारना, पैर पटकना जैसी क्रियाए भी सम्मिलित है संचार के लिए शब्दो की मध्यस्थता आवाश्यक नही है दृश्य, श्रव्य, स्पर्श, और प्राण शक्तियो के माध्यम से संचार सम्पन्न होता है गाडी की आवाज, कदमो की आहट, द्वार पर लगी कुन्डी का खट–खाटाया जाना अथवा कॉलबेल का बजना,

किसी के आने की सूचना देता है अपनी ऑखो के माध्यम से हम अनेक क्षेत्रो में संचार स्थापित कर लेते है किसी को देखकर मुस्कुराना, हाथ जोडकर नमस्कार करना हमारे मधुर भाव को दर्शाता है। कमरे के अन्दर बैठे–बैठे मिट्टी से उठने वाली सोधीं गन्ध पाकर हम जान जाते है कि बाहर वर्षा प्रारम्भ हुई है। रसोईघर से आने वाली विभिन्न प्रकार की सुगन्धो के द्वारा व्यंजनो का पता चलता है, इसी प्रकार दुध के उफनाने या दाल के जलने का पता भी गन्ध के द्वारा हमे प्राप्त हो जाता है।

1. वैयक्तिक संचार
2. पारस्परिक संचार
3. सामूहिक संचारे
4. सामाजिक संचार

संचार का महत्व

संचार प्राणाली के अर्न्तगत संचालक द्वारा व्यवहार किए जाने वाले शब्द और उनके अर्थ सुस्पष्ट होने चाहिए। ग्रहणकर्ता के पास शब्दो का पूर्वानुभाव भी होना चाहिए यादि एक ही शब्द के दो या अधिक अर्थ है तो संचारक के प्रेषण और गृहणकर्ता के गृहण करने में अन्तर आ सकता है। भारत जैसे विशाल और बहुभाषी देश में इस तरह की समस्याऍ अधिक देखने को मिलती है।

संचारक

संचार प्रक्रिया का स्त्रोत या आरम्भकर्ता संचारक होता है। इसे प्रारम्भ बिन्दु भी कहा जा सकता है। प्रसार प्रणाली में इसके कई नाम या रूप हो समते है। यथा स्त्रोत, प्रेषक, सूचनावाहक, संचारक, वक्ता इत्यादि संचाकर को संतुलित व्यक्ति का होना चाहिए उसके पास अपने विषय का विस्तृत ज्ञान होना चाहिए। संचारक की जिम्मेदारी या सामाजिक जिम्मेदारीयों से परीपूर्ण होता है। उसकी प्रस्तुती मात्र तथ्यो, विचारो सुचनाओं आदि को ही प्रेषित नही करती वर्न लोगो को परिवर्तन की ओर आग्रसर होने को प्रेरित करती है।

संदेश

संचार प्रक्रिया के अर्न्तगत संचार का प्रथम कार्य संदेश या उसकी विषय वस्तु का चयन करना होता है यह कार्य प्रायः मानसिक धरातल पर प्रारम्भ होता है। गहन सोच विचार आवाश्यक है संदेश की विषय वस्तु महात्वपूर्ण उपयोगी समसमायिक तथा सर्वानुकुल होने के साथ–साथ रूचिकर भी होन चाहिए।

संचार माध्यम

मानव संचार का इतिहास अत्यन्त पूराना है किन्तु संचार माध्यमो के इतिहास में 20वीं शाताब्दी में उल्लेखनीय प्रगती हुई है। सदियो तक विभिन्न लोग माध्यम जैसे– लोकगीत, लोकनाटक, लोकनृत्य, कठपुतली के खेल भांड, लावणी, बाउल इत्यादि संचार माध्यम रहें।

प्राप्तकर्ता

संदेश के प्राप्तकर्ता पाठक श्रोता तथा दर्शक सामान्य रूप से हुआ करते है। संदेश हो प्राप्त करने वाले प्रायः संचार माध्यम से सम्बध होते है। उदाहरणार्थ जिनके पास टेलीवीजन है उसके माधम से संदेश प्राप्त कर सकते है जो पढे लिखे है उनके लिए अनेकानेक छपित माध्यम उपलब्ध होते है। व्यक्तिगत सर्म्पक या ग्रह संम्पर्क के द्वारा के द्वारा ही प्राप्त कर्ता को चयनित करना प्रसार कर्ता के लिए सहज रहता है इससे संदेश सही व्यक्ति द्वारा ही गृहण किया जाता है।

विशेषताये

स्पष्ट एवं सहज

संचारक द्वारा प्रेषित संदेश संमझने मं स्पष्ट तथा अनुकरण में सहज होना चाहिए। इससे संचारक के प्रति विश्वासनीयता भी बढ़ती है। जटिल तथा पेचीदा बाते गृहण कर्ता में संदेह जगाती है। तथा वह सम्पूर्ण एकाग्रता के साथ उन्हे ग्रहण नही कर पाता। संदेश के माध्यम से बताई गई प्रणाली पूरी तरह व्याख्यित होनी चाहिए।

लाभ

मानव स्वभाव का एक महत्वपूर्ण पक्ष है कि किसी भी बात की लाभप्रद संम्भावनाओं को देखना मनुष्य हर काम इसी उद्देश्य से कर्ता है एक कृषक भी नई पद्यती को इसी उद्देश्य से गृहणकर्ता है कि उसे उससे अधिक धनोपार्जन होता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुरूपता

हर व्यक्ति सामाजिक बन्धनो और सांस्कृतिक रीति रिवाजो विश्वासो के दायरो में कैद रहता है ये सब उसके जीवन में आदत का रूप धारण कर लेते है। संचारक का यह कर्ताव्य होता है कि कोई संदेश प्रेषित करे तो व्यक्ति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्वासो पर किसी प्रकार का कुठाराघात ना हो संदेश में इन मान्यताओं के प्रति अनुरूपता झलकनी चाहिए। इनमे यदि परिवर्तन लाना हो तो परोक्ष ढंग अपनाया जाना चाहिए। किसी भी मान्यता को स्पष्ट रूप से गलत या बुरा कहना संचार मन में बाधक हो सकता है।

मितव्ययता

संदेश द्वारा बतायी गई विधियॉ या कार्य खर्चीले नही होने चाहिए। अनुमान्य लागत पर ध्यान जाते ही गृहण कर्ता अवनी रूची खो बैठते है।

विभाज्यता

प्रसार काल के अर्न्तगत प्रेषित संदेश का उद्येश्य पूरे समुदाये या वर्ग के कल्याण में निहित होता है किन्तु संचारित संदेश का ग्रहणकर्ता एक अकेला किसान भी हो सकता है। ऐसा देखा गया है कि नय प्रयोगो को लोग वृहत रूप में अधिक लागत लगाकर अपमानित से हिचकिचाते है। ऐसी स्थित में संदेश की विभाज्यता महत्वर्पूण भूमिका निभाती है। नवाचार को छोटे पैमाने पर अपनाकर तथा निष्कर्ष या परिणाम से संतुष्ट होना, प्रेषित संदेश का एक विशिष्ट गुण है। जिसके सहारे लोग बडे पैमाने पर अनुसरण करने को प्रेरित होते है।

जन सम्बोधित एवं बहुहितकारी

संचारक द्वारा प्रेषित संदेश सामान्य जन समुदाय को संम्बोधित होना चाहिए तथा उससे पहुॅचने वाले लाभो से विराट जन समुदाय लाभान्वित होना चाहिए। एक छोटे वर्ग को लाभ पहुॅचाकर जनकल्याण की परिकल्पना नही की जा सकती है। अतः संदेश में ''बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'' की भावना निहित होनी चाहिए।

अध्ययन का उद्देश्य

भाषा एक येसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी बाते दूसरो तक पहुॅचाते है। तथा दूसरो की बाते

हम तक पहुॅचती है। 24 छण्टो में से आधा समय हम बाते करते विताते है। । good message is that which is valid, unambiguous, comprechensive and of utility to the receivers. -हम अधिकांश समय बाते करते, बाते सुनते, पढ़ते या लिखते हुए व्यतीत करते है। संचार का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत होता है प्रायः उठने के साथ ही व्यक्ति संचार के घेरे में बन्ध जाता है। तथा रात में सोने के समाय ही उसे निकाल पाता है। प्रातः घर के लोगो से बात–चीत य अखबार पढ़ना, रेडियो सुनना, टेलिविजन देखना सभी संचार के ही रूप है। इनमे कुछ प्रत्यक्ष होते है और कुछ आप्रत्यक्ष होते है। समाचार पत्र में छपी खबरे व्यक्ति के सामाजिक दायित्वो को उजागर करती है और उसके सामाजिक प्राणी होने का एहसास दिलाती है। जिससे वह अपने निकटवर्ती एवं दूरस्थ घटित होने वाली घटनाओं से अपने को जोडता है। किन्तु समाचार पत्रो को समाचार और विज्ञापन येसे भी होते है जो व्यक्तियो से सम्बन्धित होते है। ऐ समाचार उसके जीवन य कार्य क्षेत्र से सम्बध होते है। अपने उत्पादनो के विज्ञापान वह समाचार पत्रिकाओं, होर्डिंग, बैनर, फोटोग्राफ, रेडियो विज्ञापन, टेलिविजन विज्ञापनो आदि के माध्यम से उपभोगता तक पहुॅचता है। संचार के क्षेत्र में अनुसंधान का महत्वपूर्ण स्थान है समय–समय पर जनसंचार प्रणाली तथा उसके प्रभावो का अवलोकन अत्यन्त आवाश्यक हो जाता है। उदाहरणार्थ इन प्रशनो के उत्त अनुसंघान के द्वारा ही किये जाते है।

(क) किसी समाचार पत्र को कितने लोग पढते है ?
(ख) किसी साबुन विशेष का उपयोग कितने परिवारो मे होता है ?
(ग) रेडियो या टी0बी0 के किसी कार्यक्रम विशेष के कितने श्रोता या दर्शक है तथा कार्यक्रम विषयक उनकी क्या प्रतिक्रिया है ?

निष्कर्ष

आज का योग प्रतियोगिता का योग है हर व्यक्ति एक दूसरे के प्रतिस्पर्धा की भावना रखता है और आगे निकलना चहता है। जीवन की इस दौड में कोई भी तभी आगे जा सकता है। जब वह सूचनाओं और जानकारियों से स्वंम को परिपूर्ण करे एक किसान अपनी फसल में बढोतरी तभी ला सकता है जब वह खेती की न्यूनतम जानकारियॉ रखे तथा उनका उपयोग करे। कृषि क्षेत्र में हो रहे नित नये प्रयोग इस व्यवसाय से जुडे लोगो के लिए प्रगाति उन्नति एवं अर्थिक समृद्धि के अनेका–नेक द्वार खुलते जा रहे है यहॉ प्रसार कार्य कर्ता का भी कर्त्व्य हो जाता है। कि वह स्वंय नूतन जानकारियो को प्राप्त कर किसानो तक पहुॅचाये। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रो से सम्बन्ध व्यवसायो से जुडे लोगो को भी नई–नई जानकारियॉ तथा सूचनाये देता रहे। लोगो को नई जानकारियॉ तथा सूचनाऐ विविद्य संचार माध्यम देते है तथा प्रसार कर्ता के लिए विशेष रूप से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम उनके ज्ञान स्तर को बढाने में सहायता पहुॅचाते है। जो प्रसार कर्ता अपने कार्य क्षेत्र के लोगो को नवीनतम सूचानाऐ देने में असमर्थ रहता है। वह एक आ सफल कार्य कर्ता सिद्ध होता है, अतः उसे स्वंय को संचार की विविद्य विद्याओं से जोडे रखना पडता है।

सन्दर्भ गृन्थ सूची

1. *गीता पुष्प शॉ (2008) प्रसार प्रचार शिक्षा एवं संचार व्यवस्थ*
2. *रॉबिन शॉ पुष्प (2008) आग्रवाल पब्लिकेशन्स मेरठ*
3. *पचौरी डॉ गिरीश (2014) शिक्षा का सामाजिक आधार लायन बुक डिपो मेरठ*
4. *रीना खनूना (2008) गृह व्यवस्था, आग्रवाल पब्लिकेशन्स*
5. *डॉ0 नीता आग्रवाल (2007) आग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा*
6. *डा बीना निगम (2008) जुहरी देवी गर्ल्स डिग्री कॉलेज कानपुर*
7. *श्रीमति उषा मिश्रा (1978) साहित्य प्रकाशन आगरा*
8. *अल्का आग्रवाल (1978) साहित्य प्रकाशन आगरा*